‘स्त्री के पक्ष में : सृजनात्मक प्रतिरोधी स्वर’ पर होगा चार दिवसीय राष्ट्रीय परिसंवाद

देशभर के चिंतक करेंगे विमर्श, विविध कार्यक्रमों का आयोजन

वर्धा, 02 मार्च, 2017; अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यलय, वर्धा के स्त्री अध्ययन विभाग द्वारा ‘स्त्री के पक्ष में : सृजनात्मक प्रतिरोधी स्वर’ विषय पर चार दिवसीय (05-08 मार्च, 2017) राष्ट्रीय परिसंवाद का आयोजन किया जा रहा है। इस परिसंवाद में देश के विभिन्न क्षेत्रों से कलाकारों, निर्देशकों, रंगकर्मियों एवं सहित्यकारों को आमंत्रित किया गया है। लगभग 40 से अधिक विद्वत वक्ता स्त्री विषयक मुद्दों पर विमर्श करेंगे।

चार दिवसीय परिसंवाद के तहत विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया गया है जिसमें स्त्री विमर्श से जुड़े पोस्टरों को निर्मित करने हेतु कार्यशाला, पोस्टर प्रदर्शनी, स्त्री मुद्दों पर आधारित फिल्मों का प्रदर्शन, उनके निर्देशकों से विद्यार्थियों का संवाद, कला के क्षेत्र में कार्यरत अभिनेता एवं अभिनेत्रियों से बातचीत, एकल प्रदर्शन

तथा स्त्री विषयक अन्य अभिव्यक्तियों के आयोजन को शामिल किया गया है। सुप्रसिद्ध अभिनेत्री असीमा भट्ट द्वारा नाटक ‘द्रौपदी’ का एकल नाट्य प्रस्तुत किया जाएगा।

इस परिसंवाद में सुप्रसिद्ध कथाकार सूर्यबाला (मुंबई), वंदना राग (दिल्ली), सोमा सेन (नागपुर), पी.के. मंगलम (देहरादून), जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय, दिल्ली के स्त्री अध्ययन केंद्र की अध्यक्ष प्रो.लता सिंह, सुप्रसिद्ध कवयित्री नीलेश रघुवंशी (भोपाल), गोपाल नायडू (नागपुर), जन संस्कृति मंच के संजय जोशी (गाजियाबाद), फिल्म समीक्षक डॉ. विजय शर्मा (जमशेदपुर), विश्वभारती विश्वविद्यालय, शांति निकेतन के सहायक प्रोफेसर मृत्युंजय प्रभाकर, एनडीटीवी इंडिया के शोधार्थी डॉ. अमितेश कुमार (दिल्ली), जाकिर हुसैन कॉलेज के सहायक प्रोफेसर मिहिर पांड्या, पूर्वा भारद्वाज (नई दिल्ली), डॉ. निशा शेंडे (अमरावती) सहित कई विद्वत वक्ता विमर्श करेंगे।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.गिरीश्वर मिश्र से परिसंवाद आयोजन के संदर्भ में पूछने पर उन्होंने बताया कि नारीवादी सिद्धांतों तथा नारी आंदोलनों ने हमेशा अपना प्रतिरोध सृजनात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम से दर्ज किया है। वर्तमान समय में समाज में न सिर्फ स्त्रियों की उपस्थिति बढी है बल्कि उन्होंने अपनी अभिव्यक्ति के दायरों को भी अत्यंत व्यापक किया है। यह विश्वविद्यालय न सिर्फ शोषण के उत्स को पहचानता है बल्कि उनके निवारण के उपाय भी सुझाता है। विश्वविद्यालय के स्त्री अध्ययन विभाग द्वारा आयोजित परिसंवाद कार्यक्रम से स्त्री विमर्श को नए तरीके से समझने का अवसर प्राप्त हो सकेगा।

स्त्री अध्ययन विभाग की प्रभारी विभागाध्यक्ष एवं परिसंवाद समारोह की समन्वयक डॉ. सुप्रिया पाठक ने बताया कि दरअसल स्त्रियों के पक्ष में उभर रहे प्रतिरोधी सृजनात्मकता को समझने, पितृसत्तात्मक कलात्मक अभिव्यक्तियों के दायरों से बाहर निकलकर प्रतिरोधी अभिव्यक्तियों को समग्रता में देखने, स्त्रियों के प्रति समाज की सांस्कृतिक एवं राजनैतिक समझ को विकसित करने में नारीवादी विचारधारा और पद्धति द्वारा सृजनात्मक प्रतिरोध के रूप में उठाए गए सवालों और अनुभवों को समझने के उद्देश्य से यह चार दिवसीय परिसंवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। डॉ. पाठक ने विश्वविद्यालय परिवार से स्त्री विमर्श को समझने के लिए उपस्थिति की अपील की है।